08 / 10 / 81 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

ब्रह्मा बाप की आशाओं का दीपक,
विजयी रत्न होने का अनुभव

➢➢ मैं अव्यक्त फ़रिश्ता हूँ

➳_ ➳ अव्यक्त वतन में हूँ

→ बापदादा मुझे विजयी भव का

◆ वरदान दे रहे हैं

◆ मेरे मस्तक पर विजय का

◆ तिलक लगा रहे हैं

• मैं मास्टर सर्व शक्तिवान हूँ

• सर्व शक्तियों से संपन्न हूँ

• सर्व शक्तिवान बाबा से कम्बाइन हूँ

→ मैं अष्ट शक्ति स्वरूप हूँ

◆ सभी दुर्गुणों पर मैं विजयी बन रही हूँ

◆ सर्व गुणों से मैं

• संपन्न बन रही हूँ

• सभी को आत्मा भाई की

• नजर से देख रही हूँ

• मेरे हर संकल्प

• हर बोल में

• सिर्फ सेवा है

• और स्नेह समाया हुआ है

➢➢ मैं विशेष आत्मा हूँ

➳_ ➳ बाप समान हूँ

➳_ ➳ संपन्न मूर्त हूँ

→ मैं ब्रह्मा बाप की

◆ आशाओं का दीपक हूँ

• कर लेंगे... के बोल समाप्त कर

• मैं आत्मा तीव्र पुरुषार्थ कर रही हूँ

• उमंग उत्साह के

• पंख लगाकर

• मैं उड़ रही हूँ

→ स्व परिवर्तन के

◆ लक्ष्य की और

- तीव्रता से आगे बढ़ रही हूँ
- सभी को उमंग से आगे बढा रही हूँ

→ मैं बाबा के स्नेह में समाई हुई हूँ

◆ सर्व बन्धनों से

- मैं मुक्त बन रही हूँ

→ मैं बापदादा के

→ संपन्न बनने के

→ श्रेष्ठ संकल्प को

→ साकार कर रही हूँ

◆ अविनाशी दृढ़ता से

◆ अविनाशी दृढ संकल्प की तीली से

◆ अविनाशी विजयी बन रही हूँ

- अपने चेहरे से
- अपनी चलन से
- साकार बाप की
- मूर्त को प्रत्यक्ष कर रही हूँ